चेतावनी एवं स्ट्रेस सूचकांक और मछली व्यवहार/रिपोर्टिंग

जो के किषकूडन

मछलियाँ दृश्य सेंसर, प्रकाश, अकोस्टिक सिग्नेचर (acoustic signatures), रासायनिक और कीमोसेंसरी संकेतों और छाया/आश्रय तथा खाद्य की उपलब्धता जैसे कई कारणों से चट्टानों की ओर आकर्षित होती हैं। विविध मछली ग्रुप वृद्धि के अनुसार अपने आकार परिवर्तन में विविध प्रकार के स्वभाव दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, बैराकुडा मछली किशोर अवस्था में झुण्ड में रहती है परन्तु परिपक्व अवस्था में यह मछली झुंडों से अलग होकर कम संख्या में तैरती हुई पायी जाती है, समान उदाहरण शूली महाचिंगट, गोबिड़े मछली, स्कोरपियोन मछली, लायन मछली और स्नाप्परों में देखा जाता है। छोटी करेंजिड, रैबिट मछली तथा कार्डिनल मछलियाँ अपने जीवन के सभी चरणों में एक ही स्थान में बसती हैं और समान झुंडों में पायी जाती हैं। अतः चयनित प्रजातियों में से झुंडों में पायी जाने वाली मछलियाँ, एकमात्र दिखाई देनेवाली मछलियाँ, प्रवासी मछलियाँ तथा अतिथि मछलियों का अलग रूप से निर्धारण करना अनिवार्य है, जिसके आधार पर चट्टानों का मूल्यांकन करना उचित होगा।

हालांकि, कृत्रिम चट्टान प्राकृतिक या प्रेरित दोनों तरह के नकारात्मक प्रभावों से ग्रस्त हैं, जो बदले में चट्टान समुदायों को विपरीत रूप से प्रभावित कर सकते हैं। चट्टानों के निष्पादन एवं मात्स्यिकी के सम्बन्ध में ए आर एस सी सदस्य और सक्रिय मछुआरे समुदाय के बीच हमेशा संपर्क रहना चाहिए और सूचनायें एवं परिवर्तन का कारण लॉग बुक में सूचित करना चाहिए। कम पकड दर, सी पी यु ई की कमी और सूचकांक प्रजातियों या मछली जीवन की सूचना का अभाव मछुआरों के मन में आकांक्षा पैदा करती है। ऐसी सूचना प्राप्त होने पर तुरंत गोताखोर की सहायता से चट्टानों का निरीक्षण किया जाता है, जिससे यह पता लग सके कि सामग्रियों को हटाया है या विघटित किया है या बड़े जालों में फसाया हुआ है।

अगर कृत्रिम चट्टानों के मोड्यूलों में गोस्ट जाल या अन्य जाल फँस जाते हैं तो उनमें निहित मृत मछलियों के कारण बदबू होती है और प्राणिजात चट्टानों के बाहर जाते हैं। जबकि यह घटना तात्कालिक है तो भी इसका प्रभाव एक महीने तक होता है। चट्टानों में पाए जाने वाले जालों में अनेक सूक्षम जंतु एवं प्राणिजात एकत्रित होते हैं और छोटे जंतुओं और मछलियों के लिए निवास स्थान है। परन्तु यह जाल समुद्री स्तनियों और कच्छपों के लिए हानिकारक है और इसलिए कृत्रिम चट्टानों की निरंतर निगरानी करना आवश्यक है।

स्ट्रेस युक्त मछलियाँ समीपस्थ चट्टानों या क्षेत्रो में उचित स्थान की तलाश करती हैं और जब तक उन्हें पर्याप्त खाद्य के साथ एक उपयुक्त स्थान नहीं मिल जाता है, तब तक वे अस्थायी रूप से बाहर चली जाती हैं। चट्टानों के बदलती संरचनाओं के साथ छोटे ग्रुप या निवासी मछलियाँ अनुकूलन करती हैं परन्तु प्रवाल या खंडित कवच से अकेशरुकियाँ बाहर निकल जाते हैं। गोस्ट जालों में मृत मछलियाँ होने पर चारा मछलियाँ दूर रहती है परन्तु बड़ी परभक्षी मछलियाँ चट्टानों में ही रहती हैं।

ए आर एस सी और गठित समिति– सदस्यों को घटनाओं और उल्लंघनों पर अपनी राय बताने, चर्चा कराने और शांतिपूर्ण तरीकों से मछुआरे नेताओं को इस पर रिपोर्ट प्रदान करने के लिए सशक्त कराता है। ये नेता समीपस्थ गाँव के नेताओं को इस समस्या की रिपोर्ट कर सकते हैं आगे इस मामले को राज्य विभाग के अधिकारियों को ऑन–फील्ड फोटो या पोत पंजीकरण संख्या आदि जैसे सबूतों के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है।

चेतावनी के संकेतकः

1. मछली पकड़ और दर में कमी
2. मछलियाँ चारा नहीं काटती
3. पहले की तरह जीवित मछलियाँ उपलब्ध नहीं

4. कांटा डोर और जिगों के लेड के भार जालों पर फंस जाते हैं
5. बोटम सेट गिल जालों और ट्रामेल्स पर काम करने वाले अन्य मछुआरों द्वारा परिचालन का संकेत
6. सेपिया जालों और सेट गिल जालों के संकेत
7. चट्टान स्थानों के ऊपर परिचालन करने वाले आनायकों से संकेत या रिपोर्ट
8. चट्टान स्थानों के ऊपर मत्स्यन करने वाले बड़े सीनों के परिचालकों से संकेत
9. तैरती हुई मृत मछली
10. तमिल नाडु में अगस्त–सितंबर के दौरान समुद्र तल पर उत्स्रवण होने की स्थितियों से नीचे के जीवों को अर्ध–बेहोश अवस्था में लाती है। चट्टान क्षेत्रों में तलीय उत्स्रवण की वजह से नितलस्थ मछलियाँ जैसे हालिबट और चपटी मछलियाँ और ट्रिगर फिशस ऑक्सिजन की कमी की सूचना देती हुई सतह पर आती हैं।